माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 4 अप्रैल, 2016 को वत्सल छाया संस्था, चण्डीगढ द्वारा आयोजित कौशल उत्सव में दिया गया भाषण।

अतिरिक्त मुख्य सचिव, उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा श्री विजय वर्धन जी; नगर निगम, चण्डीगढ के आयुक्त श्री बलदेव पुरूषार्थ जी, जिन्होंने योजना की जानकारी भी दी; नगर निगम चण्डीगढ के संयुक्त आयुक्त श्री राजीव गुप्ता जी; वत्सल छाया ट्रस्ट की चेयरपर्सन श्रीमती संगीता वर्धन जी; अन्य महानुभाव जो इस अवसर पर उपस्थित हैं और चण्डीगढ़ की विभिन्न बस्तियों से, विभिन्न जगहों से आई, जिन्होंने हुनर का प्रशिक्षण प्राप्त किया है, कुछ सीखा है, ऐसी सभी प्रतिभागी महिलाएँ!

यह कौशल उत्सव है। हम अपने समाज में बहुत से उत्सव मनाते हैं, बहुत से त्योहार मनाते हैं, बहुत से festivals मनाते हैं। प्रत्येक त्योहार एक अलग आनन्द लेकर आता है। उस त्योहार का कोई न कोई संदेश भी होता है। जब भी कोई उत्सव आता है तो हम पहले से ही उसकी तैयारी करते हैं और उस उत्सव का पूरा का पूरा आनन्द लेते हैं। जिस तरह से हमारे अन्य उत्सव हैं, उनका अपना महत्व है, वे आनन्ददायक हैं, वे खुशी और प्रसन्नता लेकर आते हैं, प्रफुल्लता लेकर आते हैं, आज के भारत में, 21वीं शताब्दी में उसी तरह का ही यह उत्सव है। लेकिन यह कौशल के विकास का उत्सव है, यह हुनर का उत्सव है, यह हमारी अपनी कार्यक्षमता का उत्सव है।

अगर आप किसी व्यक्ति से पूछें कि आपको कुछ आता है? आप कमा सकते हैं? आप कुछ कर सकते हैं ? यदि वह यह उत्तर देता है कि नहीं कुछ नहीं कर सकता तो वह समाज के ऊपर बोझ हैं। यदि किसी के अन्दर कोई कुशलता नहीं है, कोई हुनर भी नहीं है, कोई skill नहीं है, कुछ उसको आता नहीं है, तब फिर हम उस आदमी के बारे में और क्या कहेंगे ?

देश का प्रत्येक आदमी कुशलता से और हुनर से युक्त हो और अपने पैरों पर खड़ा हो सके तो वह देश की शक्ति बन जाता है। जो अपने पैरों पर खड़ा ही नहीं हो सकता वह जीवन का आनन्द नहीं ले सकता। जो अपने पैरों पर खड़ा ही नहीं हो सकता वह physically handicapped कहलाता है, वह विकलांग कहलाता है। क्योंकि उसके पैर ठीक नहीं हैं, इसलिए वह खड़ा नहीं हो सकता। लेकिन अगर सब कुछ ठीक होने के बावजूद भी वह कुछ नहीं कर सकता इसका मतलब यह है कि वह भी पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता, क्योंकि उसको कुछ आता ही नहीं है। तो उसको भी आप विकलांग ही कहेंगे। देखने में तो वह विकलांग नहीं है लेकिन योग्यता की दृष्टि से, कार्यक्षमता की दृष्टि से वह विकलांग ही है। इस देश के अंदर बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो इस तरह

के विकलांग हैं। जिस देश में ऐसे लोगों की जितनी संख्या होगी, हुनर की कमी के कारण, वह देश उतने ही प्रतिशत विकलांग होगा।

यहाँ पर कौशल उत्सव के साथ–साथ कितना अच्छा लिखा हुआ है –महिला सशक्तिकरण, सशक्त महिला। यह सशक्त महिला देश का आधार है। क्योंकि यह अपने भारत को सशक्त बनाएगी। हमको सशक्त महिला चाहिए। तभी हमारा समाज सशक्त बन सकता है, तभी हमारा समाज श्रेष्ठ बन सकता है, तभी हम उस समाज पर अभिमान कर सकते हैं। जब सशक्त महिलाओं के आधार पर समाज सशक्त बनता है तब तो उस देश की नींव भी मजबूत होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक जन को कुशलता से हम सक्षम कर देते हैं, तब वह अपने पुरूषार्थ से अपने सम्मान और अपनी आजीविका की व्यवस्था भी कर लेता है।

इसलिए जैसे हमारे अन्य पारम्परिक उत्सव होते हैं उसी तरह का यह राष्ट्र का उत्सव है–कौशल उत्सव। कौशल उत्सव को जो मनाते हैं, हर एक को जो हुनर सिखाते हैं, उनकी जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है। इससे बड़ी राष्ट्र की सेवा और कोई नहीं हो सकती।

भगवान ने सबको जीवन दिया है, जन्म दिया है, हर चीज आपको दी है। आपको कुशलता, पुरूषार्थ और सामर्थ्य, सब कुछ दिया है। लेकिन अगर आपको कुछ नहीं आता है तो आप भगवान की दी हुई शक्ति का उपयोग नहीं कर रहे। इसलिए बिना कुशलता के, बिना हुनर के कोई काम नहीं बनता।

सरकार ने तो कई योजनाएँ बनाई हैं। अन्तोदय योजना है, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन भी है जो मुख्यतः कौशल विकास, स्वरोजगार, ऋण उपलब्धता द्वारा आजीविका के नए रास्ते बना रहा है। हर जगह सरकार की जो भी संस्थाएँ हैं, local semi government की वे भी इस दिशा में ध्यान दे रही हैं। लेकिन ये सब बिना समाज के सहयोग के नहीं चल सकतीं। समाज का सहयोग इसके लिए बहुत जरूरी है।

वत्सल छाया इसी तरह की एक स्वयंसेवी संस्था है जो आपको पालन–पोषण का हुनर सिखाती है, गरीबी को दूर करने का हुनर सिखाती है। शहरी गरीबी उन्मूलन के काम में वत्सल छाया सराहनीय योगदान कर रही है। 2008 में स्थापित यह संगठन वंचित बच्चों, युवाओं और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम कर रहा है। मुझे बताया गया है कि वत्सल छाया को 2012 से राज्य गरीबी उन्मूलन सेल चंडीगढ़ के तहत कौशल प्रशिक्षण प्रदाताओं के रूप में पैनल में शामिल किया गया है। तब से इस संगठन ने राज्य शहरी गरीबी उन्मूलन सेल के साथ काम करते हुए 450 से अधिक महिलाओं को अब तक प्रशिक्षित किया है। ऐसी संस्थाओं के प्रयास से चण्डीगढ़ की 21 प्रतिशत गरीब आबादी अगर सशक्त हो जाती है, गरीबी से मुक्त हो जाती है, वह ठीक प्रकार से अपने

पैरों पर खड़े होकर अपनी आजीविका कमाने योग्य हो जाती है, तो चण्डीगढ़ की जो सुंदरता है, चण्डीगढ़ का जो सम्मान है, उसकी रक्षा हो पाएगी।

हम चण्डीगढ़ को सुंदर बनाना चाहते हैं, ग्रीन बनाना चाहते हैं, कैरोसीन फ्री करना चाहते हैं, किसी भी तरह का डर नहीं हो, सुरक्षा हो, इसे इस तरह का बनाना चाहते हैं, और अन्त में हम इसको स्मार्ट सिटी बनाना चाहते हैं। लेकिन ये सारी की सारी चीजें तब तक संभव नहीं हैं जब तक चंड़ीगढ़ की 21 प्रतिशत आबादी गरीबी से मुक्त नहीं हो जाती। गरीबी से मुक्ति बहुत जरूरी है। इसलिए उसके लिए इस तरह का कौशल, इस तरह का हुनर सिखाने के लिए वत्सल छाया और यहाँ की नगर निगम की मैं तारीफ भी करता हूँ। इन सबको जितना सहयोग दिया जाए वह भगवान की सेवा है, क्योंकि मनुष्य की सेवा भगवान की सेवा होती है। नर सेवा–नारायण सेवा।

बहुत बहुत धन्यवाद!